।। फळ फूल को अंग ।।मारवाडी + हिन्दी(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधािकसनजी महाराज और जे.टी.चांडक इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नहीं करना है। कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नहीं हुआ, उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढ़नेके लिए लोड कर दी।

ा अथ फळ फूल को अंग लिखंते ।। ॥ कवत ।। सक्त पंथ मे आय ।। भिन्न खोवे नर सारी ।। एम् पांच पीर ।। अलख सिंवरे नर नारी ।। एम पूजे पांच पीर ।। अलख सिंवरे नर नारी ।। एम पांच पीर ।। अलख सिंवरे नर नारी ।। नर नरा मे बीर ।। नार जोगणी कुवावे ।। सुखराम ग्यान बैराग बिन ।। मोख न पावे कोय ।। ति मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१।। कोई शिक्त पंथ मे (कुंखपंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का भिन्न भा नहीं रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर-नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने-पिने । सभी कर्म साथमें करते और पाबू हरबू,जांडेवा जेहा,मांगिलया मेवा और रामदेव इन पाँच पीरांकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ मनुष्यके अगले जनममें जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमें बीर बनता और ना पम भित्तसे किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैरायही साध- पद्या । ज्ञान वैराय छोड़के तिब्बर तथा मद वैराय साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। तिंब मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शिक्त पंथमे(कुंखपंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू, महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान स्मान बेराय खोस मोलाने करान सम्मान के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकमों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन्धा भिलता । मोक्ष मिलता के लिये ज्ञान वैराय ही साध- पाम पत्ता । ज्ञान वैराय छोड़के तिब्बर तथा मद वैराय साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।। सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाम ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड मे खेले ।।	राम
सक्त पंथ में आय ।। भिन्न खोवे नर सारी ।। एम पूजे पांच पीर ।। अलख सिंवरे नर नारी ।। एम पूजे पांच पीर ।। अलख सिंवरे नर नारी ।। एम जा का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर नरा में बीर ।। नार जोगणी कुवावे ।। सुखराम ग्यान बैराग बिन ।। मोख न पावे कोय ।। एम लोई शक्ति पंथ में (कुंडपंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का भिन्न भा नहीं रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर-नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने-पिने । राम पीरोकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ पाम पिरायों पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ पम पिरायों जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शिक्ता ।।।। राम पढ़ता । ज्ञान वैराग्य छोडके तिबंदर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।।। राम पाम पाम सक्त पंथ में अथ ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ पूल ।। जनम अगले नर पावे ।। तिव्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शक्ति पंथमें(कुंडपंथ में)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान सम्पा साम करा विराय पाने कर्मा करा विश्व ।। पाम पाम साम करा ति तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साम साम और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उप मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथ(कुंड पंथ)ः पद्मा पद्मा केता । ज्ञान वैराग्य छोडके तिबंदर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।। पाम पहला परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्त पंथ (कुंड पंथ)ः पद्मा मिलत केता मेले ।। पाम पहला । ज्ञान वैराग्य छोडके तिबंदर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।। पाम पहला । ज्ञान वैराग्य छोडके तिबंदर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।। पाम पहला । ज्ञान वैराग्य छोडके तिबंदर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।।	राम
पूजे पांच पीर ।। अलख सिंवरे नर नारी ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर नरा मे बीर ।। नार जोगणी कुवावे ।। सुखराम ग्यान बैराग बिन ।। मोख न पावे कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१।। कोई शक्ति पंथ में (कुंडापंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का मिन्न भा नही रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर—नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने—पिन भा नही रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर—नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने—पिन भा मनुष्य के अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमे बीर बनता और ना पिरायो पेराकी पुजा करते और सभी नर—नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उस मनुष्यके अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमे बीर बनता और ना पिरायो पेराकी पुजा करते और सभी नर—नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उस मनुष्यके अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमे बीर बनता और ना पिरायो पेरायो के कियो ज्ञान वैराग्यही साध्य पद्या । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।। पाम सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। सां खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। सां खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। सां खेल नर नार ।। मित्त कर्मा दिस ताणे ।। सां खेल नर नार ।। मित्त कर्मा दिस ताणे ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शक्ति पंथमें (कुंडापंथ में)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान नित्य माने शुभ कर्म की मर्यादा नहीं मानते और किसी की भी रत्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी में से नर निचकर्म करनेवा सांसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ)। सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंंड में खेले ।।	राम
जां का ओ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर नरा मे बीर ।। नार जोगणी कुवावे ।। सुखराम ग्यान बैराग बिन ।। मोख न पावे कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१।। कोई शक्ति पंथ में(कुंडापंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का मिन्न भा नही रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर-नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने-पिने । सभी कर्म साथमें करते और पाबू,हरबू,जाडेचा जेहा,मांगलिया मेवा और रामदेव इन पाँच पीरोकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका ज गम मुख्यके अगले जनममें जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमें बीर बनता और ना राम पित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शिक्त गंधा भित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शिक्त गंधा भित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शिक्त गंधा भित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शिक्ता ।।।। स्ता पंथा भे आय ।। ग्यान ध्यान नही जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे कोई इस शिक्त पंथमें(कुंडापंथ में)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकमों की ओर खिचते इसका जस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन्ता मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ)। पाँच ईंदी जीत ।। मोश मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पद्मा । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोश नही मिलता ।।।। सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईंदी जीत ।। फलट ब्रह्मंड में खेले ।।	
नर नरा मे बीर ।। नार जोगणी कुवावे ।। पुखराम ग्यान बैराग बिन ।। मोख न पावे कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१।। कोई शक्ति पंथ मे(कुंडापंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का भिन्न भा नहीं रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर—नारी इकट्ठा होकर सभी खाने—पिने । सभी कर्म साथमें करते और सभी नर—नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ ग्या मनुष्यके अगले जनममें जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमें बीर बनता और ना रम्म पित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथा पान सित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथा पान सित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथा पान सित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति ।।।। पान सित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति ।।।। स्क्रा । ज्ञान वैराग्य छेडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।। पान संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। पान संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बेरा ।। जनम अगले नर पावे ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।।।।। कोई इस शक्ति पंथामें (कुंडापंथ मे)आकर ब्रन्डा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकर्मो की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ)। पाम पित्र से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पद्मा । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।। साच बिरा पान मेले ।। पित्र सार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाम प्रमा में आया ।। साच बिन पांव न मेले ।।	राम
सुखराम ग्यान बैराग बिन ।। मोख न पावे कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१।। राम कोई शक्ति पंथ में (कुंडापंथ, बाम मार्ग, भैरवी चक्र) आकर किसी भी प्रकार का भिन्न भा नही रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर-नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने-पिने । सभी कर्म साथमे करते और पाबू हरबू जांडचा जेहा, मांगलिया मेवा और रामदेव इन पाँच पीरोंकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उप मनुष्यके अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमे बीर बनता और ना पिन्तसों कोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं, इस शक्ति पंथा पंडता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।। पाम सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। पाम सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। पाम सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। पाम संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। पाम संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। पाम होय साँसी साटीयाँ ॥ नार बेस्या छुवावे ।। पुखराम ग्यान बेराग दे ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।। रा। वित्रम याने शुभ कर्म की मर्यादा नहीं मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकमों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उप मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं, इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पाम पितत से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड में खेले ।।	राम
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१।। राम कोई शक्ति पंथ में(कुंडपंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का भिन्न भा नहीं रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर—नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने—पिने नि सभी कर्म साथमें करते और पाबू,हरबू,जांडेचा जेहा,मांगलिया मेवा और रामदेव इन पाँच पीरोकी पुजा करते और सभी नर—नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ राम पम्च्यके अगले जनममें जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमें बीर बनता और ना राम स्त्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथा पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।१ राम सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। राम संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। राम संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। राम संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। राम विव्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। राम तेव नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। राम कोई इस शक्ति पंथमें(कुंडापंथ में)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान नित्य मद बेराग योन शुभ कर्म की मर्यादा नही मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उर् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) राम पत्ति से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।। सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। फलट ब्रहमंड में खेले ।।	राम
राम कोई शक्ति पंथ में (कुंडपंथ,बाम मार्ग,भैरवी चक्र)आकर किसी भी प्रकार का भिन्न भा नहीं रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर-नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने-पिने सभी कर्म साथमें करते और पाबू,हरबू,जाडेचा जेहा,मांगलिया मेवा और रामदेव इन पाँच पीरोकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उपम मनुष्यके अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमें बीर बनता और ना स्त्रियोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथा पदता । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।। भा संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का ओ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बेना ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। वित्त मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शक्ति पंथमें(कुंडपंथ में)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकमों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पमित से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।। सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड में खेले ।।	राम
नहीं रखते मतलब उंच तथा निच जाती के नर-नारी इकठ्ठा होकर सभी खाने-पिने सभी कर्म साथमें करते और पाबू, हरबू, जाडेचा जेहा, मांगालिया मेवा और रामदेव इन पाँच पीरोकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ मनुष्यके अगले जनममें जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमें बीर बनता और ना स्त्रियोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं, इस शिक्त पंथा भित्रत्यों के किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्यहीं साध्य पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।। पाम सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। सांगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शिक्त पंथमें(कुंडापंथ में)आकर ब्रम्हा, विष्णू, महादेव ने बनाये हुये ज्ञान, ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकमों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ) पाम पित्रता से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड में खेले ।।	
सभी कर्म साथमे करते और पाबू हरबू जाडेचा जेहा,मांगलिया मेवा और रामदेव इन पाँच पीरोकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ मनुष्यके अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमे बीर बनता और ना रिन्नयोमे जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, इस शिक्त पंथा भिक्तसे किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्यहीं साध्य पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।१ सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बेन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शिक्त पंथमें (कुंडपंथ में)आकर ब्रम्हा, विष्णू महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकमों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ) पाम भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ) पाम पहता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।। सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। रुलट ब्रहमंड में खेले ।।	
पीरोकी पुजा करते और सभी नर-नारी अलख इस शब्दका स्मरण करते इसका उ मनुष्यके अगले जनममें जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमें बीर बनता और ना रित्रयोमें जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शिक्त पंथा भिक्तसे किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्यही साध्य पडता । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।१ सक्त पंथ में आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शिक्त पंथमें (कुंडपंथ में)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकमों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ) भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ) भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ) सिव सो किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पद्या । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।। सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड में खेले ।।	
पाम पनुष्यके अगले जनममे जब मनुष्य जनम मिलता तब नर मनुष्योमे बीर बनता और ना सित्रयोमे जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं, इस शक्ति पंथर पक्ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।१ सक्त पंथ मे आय ।। ग्यान ध्यान नहीं जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का के फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। वित्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। वित्र म याने शुभ कर्म की मर्यादा नहीं मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी मे से नर निचकर्म करनेवा सांसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन्ताम भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथ(कुंड पंथ) भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथ(कुंड पंथ) भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं,इस शक्ति पंथ(कुंड पंथ) भिलत से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पद्धा । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।। सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड मे खेले ।।	JIL.
स्त्रयोमे जोगीनी बनती परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शिक्त पंथा भिक्तसे किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्यही साध्य पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।१ सक्त पंथ मे आय ।। ग्यान ध्यान नही जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बेन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शिक्त पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकर्मो की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शिक्त पंथ(कुंडा पंथ) पत्र पत्र से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड मे खेले ।।	
भिवतसे किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्यही साध्यापता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।१ सक्त पंथ मे आय ।। ग्यान ध्यान नही जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पक्ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।। सांच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड मे खेले ।।	
पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।१ सक्त पंथ मे आय ।। ग्यान ध्यान नही जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का ओ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। यम कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मो की भी स्त्री किसी भी पराये पुरु के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मो की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पड़ा भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पड़ा पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।२ सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। फलट ब्रहमंड मे खेले ।।	
सक्त पंथ मे आय ।। ग्यान ध्यान नही जाणे ।। संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। जां का अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ मोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पक्ति से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पद्धा । ज्ञान वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।२ सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। फलट ब्रहमंड मे खेले ।।	
संगे खेल नर नार ।। नित्त कर्मा दिस ताणे ।। राम जां का ओ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। राम कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ भोग करती तथा सभी नर–नारी नित्य कुकर्मो की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर–नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन् राम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम	राम
पाम	राम
नर होय साँसी साटीयाँ ।। नार बेस्या कुवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। यम कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के साथ मोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) भिक्त से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध्य पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।२ सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। फलट ब्रहमंड मे खेले ।।	राम
सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंते कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान के लियम याने शुभ कर्म की मर्यादा नहीं मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।२ सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। ऊलट ब्रहमंड में खेले ।।	राम
तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२।। राम कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान को त्रियम याने शुभ कर्म की मर्यादा नही मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर—नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर—नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) भिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।२ सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। ऊलट ब्रहमंड मे खेले ।।	
कोई इस शक्ति पंथमे(कुंडापंथ मे)आकर ब्रम्हा,विष्णू, महादेव ने बनाये हुये ज्ञान,ध्यान र नियम याने शुभ कर्म की मर्यादा नही मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी मे से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम मे वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) भितत से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधर पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।२ सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।।	राम
नियम याने शुभ कर्म की मर्यादा नही मानते और किसी की भी स्त्री किसी भी पराये पुर के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, इस शक्ति पंथ (कुंडा पंथ) पम भिक्त से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साध- पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।२ सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईदी जीत ।। ऊलट ब्रहमंड में खेले ।।	क्ते राम
के साथ भोग करती तथा सभी नर-नारी नित्य कुकर्मों की ओर खिंचते इसका उस नर नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, इस शक्ति पंथ (कुंडा पंथ) भितत से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधर पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।२ सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड में खेले ।।	
नारी को जब अगला मनुष्य जनम मिलता तब नर-नारी में से नर निचकर्म करनेवा साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन् मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) भिलत से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधन पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।२ सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड में खेले ।।	
साँसी और साटे जात के बनते और नारी अगले जनम में वेश्या होती । यह फल उन् पम मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इस शक्ति पंथ(कुंडा पंथ) अपने भिक्त से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधन्य पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।२ सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड में खेले ।।	
भिक्त से किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधन् पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।२ सिव मार्ग में आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड में खेले ।।	हे
पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।२ सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड मे खेले ।।	के राम
सिव मार्ग मे आय ।। साच बिन पांव न मेले ।। पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड मे खेले ।।	ग राम
पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड मे खेले ।।	। राम
पाँचू ईद्री जीत ।। ऊलट ब्रहमंड मे खेले ।।	राम
राम	राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

राम	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	राम
राम	जाँ का अ फळ फुल ।। जन्म अगले नर पावे ।।	राम
राम	सक्त लोक ही लोप ।। जोत मे जोत समावे ।।	राम
	सुखराम ग्यान बराग बिन ।। माख न पूत काय ।।	
राम	ार्ष्ट्र नेत्र वर्गन र १। ६५ वहद वर्ग हात्र ।। र ।।	राम
	शिवमार्ग मे आकर विश्वास से शिवब्रम्ह की भिक्त करता और शिव मार्ग से बाहर पैर नही	
राम	रखता और पाँचू इंद्रियो को जितता तथा उलटकर ब्रम्हंड मे जाकर खेलता । इस धर्म का	राम
राम	फल उसका शरीर छुटने के बाद यह मिलता की वह शक्ति लोक के आगे ज्योती लोक मे	राम
राम	जाकर ज्योती लोकमे के ज्योतमे ज्योत बनकर समा जाता । यह फल उन्हे मिलता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि शिवब्रम्ह की भक्ति से किसी को भी मोक्ष	
	नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के	
	तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।३।।	
राम	नित ऊठ करे स्नान ।। प्रत चूके नहीं कोई ।।	राम
राम	असो प्रण वृत धार ।। नार नर झुले दोई ।।	राम
राम		राम
राम		राम
राम		राम
	तिब मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।४।।	राम
राम	जा स्त्रा–पुरुष प्रणव्रत धार क यान दृढ ानश्चय करक ानत्य प्रता मतलब कभा न भूलत	
	००वर रनान वरसा ०रावम ०रा रता युरम्बन वर्ट वर्रेंग होसा वर्ग ० ट नानुब्ब देह	
	पकडकर ८४ लाखके सभी योनीयो मे रुपवान काया मिलती । यह फल उन्हे मिलता परंतु	
राम	आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा प्रणव्रत धारने से किसी को भी मोक्ष	राम
राम	नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के	राम
राम	तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नहीं मिलता ।।।४।।	राम
	त्तता युव जग माव ।। ।नत कठ युग्न ।ववार ।।	
राम	* - 2 -	राम
राम	जाँ का ओ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।। माया सुख विलास ।। जूण भावे जिण जावे ।।	राम
राम	सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पांवे कोय ।।	राम
राम	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।५।।	राम
राम	और जो कोई इस जगत में सती पुरुष है(सती पुरुष याने मुर्दे के साथ जलनेवाली स्त्री	राम
	नहीं । सती पुरुष याने जिस पुरुष से को भी मनुष्य कोई भी वस्तु मॉगेगा वह वस्तु उसे	
-1122	दान करके दे देता)ऐसा सती पुरुष नित्य उठकर पुण्य करने का विचार करता और कोई	
राम	3	राम
	अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	
राम		
राम	मॉगा तो नही नही कहता इसका उस सती पुरुष शरीर छोड़ने के बाद मनुष्य देह पकड़कर	
	८४ लाख योनी के हर योनी में माया के सुख और विलास भीगने मिलते यह फल मिलता	
	परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसा सती पुरुष बननेसे भी किसी	
	को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष नही मिलता ।।।५।।	
राम	तिब्र ओ बेराग ।। प्रेम साहेब सूं भारी ।।	राम
राम	सिंव्रण पुन्न बिचार ।। शुभ कर्मा सूं यारी ।।	राम
राम		राम
राम		राम
राम	सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।	राम
राम	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।६।।	राम
	ातब्बर पराप्य यान पया रताबर पराप्य यान पारप्रन्ह हानपगल साहबस बहात प्रन	
राम		
	मतलब शुभ कर्म करता ऐसी भिवत साधनेवाले को तिब्बर वैरागी कहते है । ऐसे तिब्बर	
राम	तब उपका रूप प्रहालोक पे बरोन युगुश बरना और तर देवना लोक पे युगी देवनाती	
राम	का पुज्यनीय बनता यह सिधा साधा अर्थ बनता परंतु इसका यह भी अर्थ बनने की	714
राम	संभावना है कि वह अगले जनम मे या तो स्वर्ग मे जाता और वहाँ देवतावो का पुज्यनीय	राम
	बनता या शुभ कर्म स्वर्ग मे पहुँचने के लिये कम पड़ने के कारण स्वर्ग मे नही जा पाता	
राम		
राम	सुखरामजी महाराज कहते है कि,तिब्बर वैराग्य साधने से भी किसी को भी मोक्ष नही	
	मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर	
राम	त्रा ने वराच रावित रा ना नाव त्रल बहुबरा। ।।।५।।	राम
राम	मद सुण ओ बेराग ।। घेर पाँचू घर लावे ।।	राम
राम	अेक ब्रम्ह को ध्यान ।। ध्रम सब ही छिटकावे ।। जाँ का ओ फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।	राम
राम	मिले ब्रम्ह मे जाय ।। ऊलट पाछो नर आवे ।।	राम
राम	सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।।	राम
राम	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।७।।	राम
राम	मद वैराग्य याने क्या ?मद वैरागी याने वह वैरागी जो पाँचो इंद्रियो को घेरकर पारब्रम्ह के	राम
राम	ध्यान मे लगाता तथा माया के याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने बनाये हुये सभी धर्म त्यागता	
	3	
	अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट	

।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। राम राम उसका मद वैरागी को शरीर छुटने पे यह फल मिलता की वह राम राम पारक्र केनकाळ) माया का तीन लोक त्यागकर पारब्रम्ह मे जाकर मिलता परतु राम राम इस भिकत मे यह कसर है कि कुछ समय के बाद फिर से गर्भ राम मे आकर माया मे पड़ता । सदा के लिये गर्भ से मुक्त नही राम होता । परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है राम राम कि,मद वैराग्य साधने से भी किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष राम राम नही पहुँचता ।।।७।। राम राम बेराग ग्याण यूं जाण ।। पिंड ब्रेहेमंड सुई न्यारा ।। सासा का नहीं काम ।। जीभ का कहाँ बिचारा ।। राम राम सुणत मस्त होय जाय ।। ब्रम्ह आपो छिटकावे ।। राम राम शुभ असुभ दोय बास ।। निकट ने डी नही लावे ।। राम राम सुखराम ग्यान बेराग का ।। ओ लछन कहूँ तोय ।। राम राम हद बेहद कूं जीत कर ।। लियो प्रमपद जोय ।।८।। राम ज्ञान वैराग्य याने हंस मे सतस्वरुप यानेही आनंदपद याने ने:अंछर यानेही निजनाम याने राम राम सतशब्द याने परमपद प्रगट होना यह है । सतशब्द याने परमपद यह पिंड ब्रम्हंड इस माया राम से निराला है । त्रिगुणी माया के करणीयो को जीभ का स्मरण लगता तो पारब्रम्ह के पद राम को सोहम अजपा साँस का आधार लगता । यह सतशब्द याने परमपद यह निराधार रहता राम राम । इसे पारब्रम्ह के समान साँस का आधार नहीं लगता तथा माया के विधी समान जीभ का आधार नही लगता । यह साँस और जीभ के आधार बिना चोबीसो घंटा अखंडित पिंड राम राम और ब्रम्हंड के बाहर सुनाई देता । राम राम यह सतशब्द सुनते सुनते हंस अलमस्त हो जाता । यह राम राम सतशब्द याने परमपद प्रगट होने के बाद हंसका मे जीवब्रम्ह हुँ राम राम यह आपा याने अस्तीत्व खतम् हो जाता । परमपद प्राप्त होने के बाद हंस को शुभ याने शुभ करणीयाँ करनेसे तीन लोक मे राम राम त्रिगुणी माया के सुख के फल लगेगे तथा अशुभ याने निच कर्म राम राम करनेसे तीन लोकमे कालके दु:ख पड़ेंगे यह वासना उसके निकट भी नही आती । इस राम प्रकार के माया और पारब्रम्ह (होनकाल)के परे के सभी लक्षण ज्ञान वैराग्य प्रगट होने के राम बाद प्रगट होते । ऐसा ज्ञान वैराग्य प्राप्त हुवावा हंस हद याने ३लोक १४भवन और बेहद राम राम याने ३ब्रम्ह१३लोक जित कर यानेही त्रिगुटी व त्रिगुटीके परे पारब्रम्ह(होनकाल)को जित राम कर पारब्रम्ह के परे को परमपद प्राप्त कर लेता ।।।८।। राम दयावंत सोई जाण ।। दर्द राखे नही कोई ।। राम राम

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
राम	की डी कुंजर आद ।। सकळ पर क्रणा होई ।।	राम
राम	जां का ओ फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।	राम
राम	सुखी हुये जग माय ।। देव सब माँड सरावे ।।	राम
	सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।। तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद कां होय ।।९।।	
राम	जिसे चिंटी से लेकर हाथी तक छोटे बड़े सभी जीवोपर करुणा आती तथा चिंटी से हाथी	राम
राम	तक किसी को भी किसी भी प्रकार का कोई भी दु:ख हो तो अपने से हो सके वहाँतक	
राम	उसका दु:ख मिटा देता ऐसे पुरुष को दयावंत कहते है और उस दयावंत पुरुष को शरीर	
राम	छुटते पे यह फल लगता की वह हंस अगले जनम मे जगत मे माया से सुखी बनकर आता	
	व उसकी सारा जगत व देव शोभा करते परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है	
	की,ऐसा दयावंत होने से भी किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान	
राम	वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष	राम
	नहीं पहुँचता ।।।९।।	
राम	सकळ देव सूं भाव ।। चाय भारी ऊर माँही ।।	राम
राम		राम
राम	जाँ का ओ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।।	राम
राम	देहे धरे जग माँय ।। हार कबहूँ नही आवे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।।	राम
राम	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१०।।	राम
राम	कोई मनुष्य ब्रम्हा,विष्णू,महादेव तथा ब्रम्हा,विष्णू,महादेव समान सभी देवता और कर्तार	राम
राम		
राम	यह फलफुल लगता है कि उसकी मायावी किसी भी काममे हार नही होती परंतु आदी	
	सतगरु सखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे सभी देवोसे भाव रखने से और हृदयमे भारी	
राम	चाहत रखनेसे किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्य ही	राम
	साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही	राम
राम	पहुँचता ।।।१०।।	राम
राम	व्रत वास ऊपवास ।। देहे कष्टे नर कोई ।।	राम
राम	ईग्यारस चोविस ।। कर ऊजँव दे सोई ।।	राम
राम	जां का ओ फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।। मन बंछत फळ ओहे ।। देहे निरोगी कुवावे ।।	राम
	मन बछत फळ अह ।। दह ।नरागा कुवाव ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।।	
राम	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।११।।	राम
राम	1000 14 1011 VII C4 1C4 101 C17 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 1	राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ा। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। राम राम राम कोई मनुष्य देहको कष्ट देकर व्रत करता,उपवास करता,चौवीस एकादशी करता और राम उसका उद्यापन करता उस मनुष्यको अगले जनममे निरोगी शरीर यह मनोवाछित फल राम राम मिलता है । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इस व्रत,उपवास, एकादशी करनेसे किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्यही राम राम साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधनेसे भी मोक्ष में नही राम पहुँचता ।।।११।। राम गायत्री चोबीस ।। सुध्द्य साझे नर कोई ।। राम राम तीन बक्त त्रकाळ ।। नेम धर सेंठो होई ।। राम जां का ओ फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।। राम मुख सूं कहे सोई होय ।। बेण खाली नही जावे ।। राम राम सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।। राम राम तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१२।। राम राम कोई मनुष्य चौबीस गायत्री कि शुध्द साधना करता है और दृढ पूर्वक नियम रखकर राम २४घंटे मे तीन बार त्रिकाळ संध्या करता है । इन बातोसे उसे अगले जनममे यह सिध्दाई राम राम प्राप्त होती है कि वह मुखसे जो वचन बोलता वे सभी वचन फलते उसमे से एक भी राम राम वचन निर्फल याने खाली नही जाता । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,गायत्री की साधना करनेसे किसीको भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान राम राम वैराग्यही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधनेसे भी मोक्षमें राम नही पहुँचता ।।।१२।। राम राम नाम ओ सब्द ।। जोर आराधे कोई ।। राम राम सकळ ध्रम कूं छोड ।। अक पर नेछो होई ।। राम राम जाँका ओ फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।। राम राम रूम रूम रंरंकार ।। ऊलट ब्रेहेमंड मे जावे ।। राम राम सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँछे कोय ।। तिब्र मंद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१३।। राम राम राम कोई मनुष्य रामनाम इस शब्दकी जोरसे आराधना करता और ब्रम्हा,विष्णू,महादेव तथा राम शक्ति ने बनाये हुये मायाके धर्म त्याग देता इसका उसे अगले जनममे यह फल लगता कि राम राम उसके देह मे रोम-रोममे ररंकारकी ध्वनी लगती और वह ध्वनी याने आवाज उलटकर राम राम ब्रम्हंड तक पहुँचती । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते कि,इस रामनाम राम शब्दकी जोरसे आराधना करनेसे भी किसीको भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये राम ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधनेसे भी राम मोक्ष में नही पहुँचता । ।।१३।। राम राम अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
राम	जत्त सत तप तीन ।। असल धारे नर कोई ।।	राम
राम	तन मन धन सब अरप ।। देहे पर रूचे सोई ।।	राम
राम	जाँका अे फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।।	राम
	स्वर्ग लोक मे जाय ।। काँय नर भूप कवावे ।। सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूंछे कोय ।।	
राम	तीबर मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१४।।	राम
राम	जत,सत,तप ये तीनो अच्छी तरहसे विधीयुक्त कोई धारन करता और तन,मन,धन अर्पण	राम
राम	करके जत, सत, तपके लिये शरीरपर उदार रहता याने शरीरपर पडनेवाले कष्टोपे दु:ख नही	राम
राम	समजता उसे अगले जनममे ये फल मिलता कि वह या तो स्वर्गलोकमे जाता या यहाँ	
	मृत्युलोक मे राजा बनता । परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जत,सत,	
राम		
राम	साधना पड़ता। ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही	राम
राम	पहुचता ।।१४।।	राम
	च्यार पुळाँ के माँय ।। पुन्न करणी जो पावे ।।	
राम	सो नर व्हे भेभित ।। देव सब माँड सरावे ।।	राम
राम	जॉका ओ फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।। चक्रवंत नर होय ।। काँय बेराग संभावे ।।	राम
राम	सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पूँचे कोय ।।	राम
राम	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१५।।	राम
राम	होनकाळ के समय चक्र मे किसी समय चार पल आते है वे पल कभी आते ये होनकाल	राम
राम	वह मनुष्य अपने मनुष्य उम्र मे बडा वैभवशाली होता ऐसे मनुष्य की स्वर्गादिक मे देवता	
	तथा मृत्युलोक के नर-नारी शोभा करते । उसे इस फलके साथ अगले जनम मे यह फल	
	मिलता कि एक तो वह अगले जनम मे चक्रवर्ती राजा होता या वैराग्य धारन करके वैरागी	
	बनता परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे चार पलो में पुण्य हो जाने	
	से भी किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना	
राम	पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।१५।।	राम
राम	ओऊँम सब्द कूं साझ ।। ऊलट ब्रेहेमंड मे जावे ।।	राम
राम	लाख बरस लग सास ।। नाभ पाछो नही आवे ।।	राम
राम	जांका ओ फळ फूल ।। जनम अगले नर पावे ।।	राम
राम	देहे धरे क्रतार ।। राम सो द्रसण पावे ।।	राम
-		XI-I

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

र	म ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ	II राम
र	मुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।	राम
ਦ	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१६।।	<u>. </u>
	काई मनुष्य आअम शब्द का साधना करक पूर्व क दिशा स उलटकर मृगुटा ब्रम्	हड म
	चढता और भृगुटी मे लाख वर्षतक साँस रोककर रखता और साँस को नाभी मे निच	
र	म आने देता उस मनुष्यको अगले जनम मे यह फल मिलता कि उसे देह	
र	म करके(होनकाळ)कर्ता राम दर्शन देता,परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज क	
र	क,इस ओअम शब्द कि साधना करनेसे भी किसीको भी मोक्ष नही मिलता । मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्यही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद	
र	मिलानक लिय ज्ञान पराग्यहा सायना पडता । ज्ञान पराग्य छाडक तिब्बर तथा मद म साधनेसे भी मोक्षमें नही पहुँचता ।।।१६।।	पराग्य राम
	म अडसट तीरथ न्हाय ।। पिरथी प्रदिखणा देवे ।।	राम
	का मान्य मान गम । नाँच शेमी विधा नेने ।।	
	जांका ओ फळ फल ।। जनम अगले नर पावे ।।	राम
र	भक्त स्हेत सोई राज ।। देहे तज सुरगाँ जावे ।।	राम
र	मुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।	राम
र	न तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१७।।	राम
र	म कोई मनुष्य अङ्सठ तिथों मे स्नान करके पृथ्वी प्रदक्षिणा करेगा और सदा हाथो मे	
र	्र और मुख मे रामनाम का जप करेगा उसे अगले जनम मे यह फल मिलता कि उसे	7 7
	में पहुँचानेवाली माया का भक्तिसहीत राज्य मिलेगा और वह राजा देह छुटने पे रू	वर्ग मे
	जायेगा परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अड्सठ तिथीं मे स्नान	
	म से भी किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलानेके लिये ज्ञान वैराग्य ही र	
र	म पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नहीं प	हुचता राम
र	म ।।।१७।। सदा ब्रत नित नेम ।। ध्रम कन्या प्रणावे ।।	राम
र	अभेदान दे नार ।। मोल कर पूठी लेवे ।।	राम
र	जांका ओ फळ फूल ।। जन्म अगले नर पावे ।।	राम
	सुरग लोक नर जाय ।। काँय क्रो डी धज कुवावे ।।	राम
	सरवराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंने कोरा ।।	
	तिब्र मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।१८।।	राम
र	प कोई नित्य नियम पूर्वक सदाव्रत चलाता है और अपनी कन्या का धर्म के नियः	मो के <mark>राम</mark>
र	म अनुसार विवाह करता है तथा अभयदान(अभयदान याने अपने स्त्री को गहने कप	डो के राम
र	म साथ किसी को दान करना और दान पाये हुये मनुष्य से वह जो माँगेगा उस किंग	
र	वापीस खरीदना यह है) देता है इसका उस मनुष्य को अगले जनम मे यह फल	लगता राम्
	अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – मह	IJIB
	जनकरा . रारारवरम्य रारा रावाविकायणा अवर र्यम् रामरमहा वारवार, रामक्षारा (जगरा) जलगाव – मह	IXIÇ

रा		।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	
रा	म	कि एक तो वह स्वर्गलोक में जायेगा या यही क्रोडी ध्वज याने राजा के समान या राजा से	
रा	म	भी अधिक धनवान बनकर स्वर्गादिक के समान सुख लेयेगा,परंतु आदी सतगुरु	
रा	म	सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसा सदा व्रत चलाने से और अभयदान करने से किसी को भी मोक्ष नही मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान	
		वैराग्य छोडके तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।१८।।	राम
	म	भक्त नाँव सोई अंग ।। सुभ सारा जग माही ।।	राम
		प्रेम भाव प्रतित ।। बिरह ब्याकूलता कुवाही ।।	
	म	जांका ओ फळ फूल ।। जनम अंगले नर पावे ।।	राम
रा	म	काम पडयाँ क्रतार ।। काज वाँका कर जावे ।।	राम
रा	म	सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंछे कोय ।।	राम
रा	म	तिब्र मद् बेराग रे ।। हद् बेहद् का होय ।।१९।।	राम
रा	म	माया में उज्वल भक्त बनने के जो जो अच्छे अच्छे स्वभाव ब्रम्हा,विष्णू,महेश ने बताये है	ГОІН
		वे सभी अच्छे अच्छे स्वभाव धारन करता तथा सृष्टी कर्ता से प्रेभ,भाव रखता,सृष्टी कर्ता मे गाढा विश्वास रखता और उसे पाने के विरह मे व्याकुळ रहता इसका उसे अगले जनम	
		म गाढा विश्वास रखता आर उस पान क विरह म व्याकुळ रहता इसका उस अंगल जनम मे यह फल लगता कि उसे संसार मे काम पड़ने पे सृष्टी कर्तार स्वयम् आंकर उसका	
		काम करके जाता परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे माया मे	
		करूर भरूर हानने से तथा सहरी कर्ना से पेपभार स्वरूने से किसी को भी पोध नरी	
रा	म	मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर	
रा	म	तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष में नही पहुँचता ।।।१९।।	राम
	म	अनाज पुरूष कहूं त्याग ।। दूध पीवे नर पावे ।।	राम
रा	म	बन फळ फूल अहार ।। जडी बूँटी खिण खावे ।।	राम
रा	म	जांका ओ फळ फूल ।। जनम अगुले नर पावे ।।	राम
	म	झाडा झपटा रोग ।। आण नर बेद कुवावे ।।	राम
		सुखराम ग्यान बेराग बिन ।। मोख न पोंचे कोय ।।	
	म	तीबर मद बेराग रे ।। हद बेहद का होय ।।२०।।	राम
		कोई मनुष्य अन्नका त्याग करके दुध पी पिकर जीवन जिता और दुसरो को भी दुध पिलाता और जंगल के फल-फूल तथा जडी बुटी खोद-खोदकर खाता उसे अगले जनम	राम
रा	म	में यह फल लगता कि वह मनुष्य झांड फूँक तथा जडी-बुटीयों से रोग दुर करनेवाला वैद्य	राम
रा	म	बनता है,परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे किसी पुरुष ने अन्न	राम
		का त्याग किया तो भी किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता । मोक्ष मिलाने के लिये ज्ञान	
		वैराग्य ही साधना पड़ता । ज्ञान वैराग्य छोड़के तिब्बर तथा मद वैराग्य साधने से भी मोक्ष	
	म म	में नहीं पहुँचता ।।।२०।।	राम
		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
राम	कुण्डल्या ।।	राम
	पिता सरूपी राम रें ।। माता सरूपी जाण ।।	
राम	तीजो राम सरूप हे ।। घरणी धरे पिछाण ।।	राम
राम	घरणी धरे पिछाण ।। चुत्र चोथो वो होई ।।	राम
राम	सत्तगुर समरथ होय ।। ग्यान धन देवे सोई ।।	राम
राम	सुखराम किसा सुण सरूप को ।। ध्यान धरो तुम जोय ।।	राम
சாப	ब्रम्ह सकळ मे एक रे ।। राम घटो घट होय ।।२१।।	சாய
	एक राम पिताके जैसा है तो दुजा राम माताके समान है तो तिजा राम पत्नी समान है	
	और चौथा राम सतगुरु समान है। सतगुरु रुपी राम कालसे मुक्त करा देनेवाला ज्ञान	
	विज्ञानका चतुर और समर्थ राम है। वह सतगुरुरुपी राम शिष्यको ज्ञानरुपी धन देता है।	राम
राम	इसतरह से पिता,माता,पत्नी और सतगुरु स्वरुपके चार राम है। आदी सतगुरु	राम
राम	सुखरामजी महाराज सभी नर-नारीयों को पुँछते है कि,तुम किसका ध्यान करते हो?और	
	जिसका ध्यान करते हो उससे आवागमन कटेगा क्या? इसका विचार करो और ज्ञान	
	दृष्टीसे समजो की सतस्वरुप ब्रम्ह यह सर्वव्यापी है और अखंडीत है और राम याने हंस	राम
राम	सभी घट घट मे अलग अलग है। ।।२१।। रेत सरूपी राम रे।। राज सरूपी जाण ।।	राम
राम	तीजो राम सरूप हे ।। सो तो सेण बखाण ।।	राम
राम	सो तो सेण बखाण ।। चुतर चोथो वो होई ।।	राम
राम	सत्तगुरू सत्त स्वरूप ।। ताँ ही गत लखे न कोई ।।	राम
	सुखराम किसा सुण सरूप को ।। ध्यान धरो तम जोय ।।	
राम	ब्रम्ह सकळ मे एक रे ।। राम घटो घट होय ।।२२।।	राम
राम	एक राम प्रजास्वरुपी है तो दुसरा राम राजा स्वरुप है तथा तिसरा राम सज्जन याने	राम
राम	समान है और चौथा राम सतगुरुरुपी है। सतगुरु राम यह चतुर विज्ञानी है, सत्तस्वरुपी है	
राम	। उसकी गती किसीको भी भाँपते नही आती । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी	
	नर-नारीयो को पुँछते है कि,तुम किसका ध्यान करते हो?और जिसका ध्यान करते हो	
राम	उससे तुम्हारा आवागमन कटेगा क्या? इसका बिचार करो और ज्ञानदृष्टीसे समजो की	
राम	सतस्वरुप ब्रम्ह यह सर्वव्यापी है और एक अखंडीत है तथा राम याने हंस सभी घट घट	
राम	में अलग–अलग है ।।२२।	राम
राम	सोहँ पिता कूँ सिंवरताँ ।। जीव ब्रम्ह होय जाय ।।	राम
राम	ओऊंकार मा सेविया ।। कळा प्रगटे आय ।।	राम
राम	कळा प्रगटे आय ।। ररो सिंवऱ्याँ सुण भाया ।।	राम
	रूम रूम रंरंकार ।। जक्त मे प्रचा पाया ।।	
राम		राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

राम		राम
राम		राम
राम	आवा गवण न ओतरे ।। सुख मे रहे समाय ।।२३।।	राम
राम	विता के जैसे साहन् राम का स्मरन करने से जाव विता के समान वारेश्रमहे(हानकाल) वन	
	कला प्रगट होती और जीव जगत में परचे चमत्कार करता तथा पत्नी समान राम नाम का	
राम		
	सतगरु समान चौथे राम की याने सतगरु की भक्ती करने से हंस परममोक्ष मे जा मिलता	
राम	जिससे उसका आवागमन मिट जाता और वह संतस्वरुप के सुख में समा जाता ।।।२३।।	राम
राम	וו וייווי וויאלי וו ווי האשר וישראו ואידור ווי	राम
राम		राम
राम		राम
राम	सत्त गुरू सत्त स्वरूप ।। निसंक निर्भे कहूं तोई ।। सुखराम किसा सुण रूप को ।। ध्यान धरो तम जोय ।।	राम
राम		राम
राम	ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ये प्रजास्वरुपी राम है । इनकी भक्ती करनेसे हंस वैकुंठादिक जाता ।	राम
राम	घडभंजन कर्तार ये राजा समान राम है । इसकी भक्ति करने से पारब्रम्ह(होनकाळ)	
राम	स्वरुपी बनता और मै स्वयम् जीव यह ब्रम्ह हूँ और जगत के सभी जीव ब्रम्ह है यह	राम
राम	जानकर जीवब्रम्ह की जो भक्ति करता वह होनकाल पारब्रम्ह के जीवब्रम्हपद मे पहुँचता	राम
राम	और सतगुरु जो सतस्वरुपी है उनकी भिक्त करता वह काल के परे के महासुख के मोक्षपद मे जाता और उसे गर्भ मे पड़ने की कोई शंका नही रहती तथा काल खायेगा	
राम	0	
	इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतस्वरुप ब्रम्ह तो सभी मे	
राम	है,सर्वव्यापी है और अखंडीत है तथा राम याने हंस सभी घट घट के हर हंस ने	XIM
राम	त्रतास्वरंत्व अन्ह वर्ग नावत वर्ग ता राना वर्गल ता नुवत हावर त्रतास्वरंत्व वर नहातुख वद	राम
राम	मे जायेगे ।।।२४।।	राम
राम	।। इति फळ फूल को अंग संपूरण ।।	राम
राम		राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र